

सं० श्रो० वि०/एफ०डी०/154-86/43376.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० आईशर गुडयं लि०, फरीदाबाद के श्रमिक श्री गोपाल दास मार्फत श्री के. एल. शर्मा, जी-15 ओल्ड ब्रैस कालोनी, फरीदाबाद तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रीदोगिक विवाद है;

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना चांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, श्रीदोगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7क के अधीन गठित श्रीदोगिक अधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद को नीचे विनिर्दिष्ट मामला जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है अथवा विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रीदोगिक विवाद है :—

क्या श्री गोपाल दास की सेवाओं निवृति न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० श्रो० वि०/एफ०डी०/159-86/43396.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० अगुवा मैटल इण्डस्ट्रीज के-71, एन. आई.टी., फरीदाबाद के श्रमिक श्री परमानन्द मार्फत श्री चमन लाल ओबराय महा सचिव, इन्टक, जिला परिषद् 1-ए/119 एन. आई.टी., फरीदाबाद तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रीदोगिक विवाद है ;

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना चांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, अब, श्रीदोगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7क के अधीन गठित श्रीदोगिक अधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद, को नीचे विनिर्दिष्ट मामला जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है अथवा विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं :—

क्या श्री परमानन्द की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० श्रो० वि०/एफ०डी०/159-86/43403.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० अगुवा मैटल इण्डस्ट्रीज के-71, एन. आई.टी., फरीदाबाद के श्रमिक श्री हरेन्द्र तिवारी मार्फत श्री चमन लाल ओबराय महा सचिव, इन्टक, जिला परिषद् 1-ए/119, एन. आई.टी., फरीदाबाद तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रीदोगिक विवाद है ;

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना चांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, श्रीदोगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7क के अधीन गठित श्रीदोगिक अधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद, को नीचे विनिर्दिष्ट मामला जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है अथवा विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं :—

क्या श्री हरेन्द्र तिवारी की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० श्रो० वि०/एफ. डी./159-86/43410.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० अगुवा मैटल इण्डस्ट्रीज के-71, एन. आई.टी., फरीदाबाद के श्रमिक श्री कृष्ण कुमार मार्फत श्री चमन लाल ओबराय, इन्टक, जिला परिषद् 1-ए/119 एन. आई.टी., फरीदाबाद तथा प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रीदोगिक विवाद है ;

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना चांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, श्रीदोगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7क के अधीन गठित श्रीदोगिक अधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद, को नीचे विनिर्दिष्ट मामले जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है अथवा विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं :—

क्या श्री कृष्ण कुमार की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?